JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''हम नदिया की धार में मानवीय संवेदनाएं''

डॉ.गायत्री बाजपेयी
षोध निर्देषक,प्राध्यापक
हिंदी अध्ययन शाला एवं षोध केंद्र
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्वविद्यालय, छतरपुर,
मध्यप्रदेश,भारत

आशीष कुमार मिश्रा
शोधार्थी
हिंदी अध्ययन शाला एवं षोध केंद्र
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड
विश्वविद्यालय, छतरपुर,
मध्यप्रदेश,भारत

संतोष सौनकिया ''नवरस'' द्वारा लिखित ''हम नदिया की धार'' की मानवीय संवेदना अपने नाम से स्पष्ट करता है कि जीवन में भावनाएं, संवेदनाएं नदिया की तरह होती हैं। यह काव्य कृति संतोष सौनकिया ''नवरस'' द्वारा लिखी गयी है कि ''वादों के घेरे में हिन्दी कवि जगत से अलग एक ऐसा कवि समूह भी है जो सीधे आम–आदमी के आमने–सामने रहकर अपनी संवेदना को ईमानदारी से अभिव्यक्त कर रहा है।''[1]

यह गीत काव्य है, संवेदना षब्द की गहराई में दो भाव मिलते हैं इनमें से एक है सम्यक वेदना, वेदना जिसका अर्थ है ठीक–ठीक बोध अथवा सही–सही अनुभूति, इसमें निहित दूसरा भाव है समान वेदना अर्थात दूसरों की वेदना के समतुल्य वेदना। यह ऐसी अवस्था है जिसमें अपनी अनुभूति गहरी और व्यापक बनती है।

आज जो हमारा समाज है उसकी बिगड़ती रूप–रेखा को जब हम देखते है तो यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि आज हम कितने प्रायोगिक हो गए है। हमारा जो जीवन है उसमें मानव मूल्य की इतनी भारी गिरावट आयी है ''वह मानव जिसकी पहचान ही उसके मानवीय गुणों जैसे कि सहानुभूति, संवेदना, दुःख आदि होती है और यही गुण मनुष्य में न रहेंगे तो मानव और पषु में अंतर करना ही कठिन हो जाएगा।

प्राचीन काल में गाँव का गाँव हमारा परिवार होता था पर आज के समय में पति–पत्नी, माँ–पिता को साथ रखना पसन्द नहीं करते है। संतोष सौनकिया जी ने अपने काव्य में विस्तृत मानवीय मूल्यों के विघटन या खत्म हो रहे सामाजिक मूल्यों का वर्णन अपने काव्य में किया है। सौनकिया जी कहते है कि पहले अपने अन्दर व्यक्ति को झाँक लेना चाहिए फिर दूसरों पर अंगुली उठानी चाहिए।

''जिस कोने से चिन्गारी फूटी थी, पहले उस पर ही ध्यान दिया होता।
क्यों कैसे आग लगी अपने घर में, पहले इसका ही ज्ञान किया होता।।[2]

आज का व्यक्ति जितना आगे बढ़ता जा रहा है, सुख–सुविधा के लिए उतना आज वह अकेला होता जा रहा है। पहले सुख–सुविधाओं के साधन सीमित पर दिल बड़ा होता था संयुक्त परिवार होता था।

आज परिवार के नाम पर 'हम दो हमारे दो' तीसरा कोई नहीं माँ–बाप जिनसे हम है। उनको हम आज वृद्धा आश्रम में रख दिये है। इनसे बढ़ा मानवीय मूल्यों का विनाष क्या है। जिनसे हम यह जन्म पाया उन्हीं के लिए नहीं रहे है। भौतिकवादी सुख सुविधाओं में हम इतना व्यस्त हो गये है, कि हम मानवीय संवेदना को भूले जा रहे है।

नारी जो हमारे समाज को अभिन्न अंग है। उसे हमारे समाज में देवी माना जाता है। वह केवल भोज की वस्तु बनती जा रही जो हमारी संवेदनाओं को खतरा है। प्राचीन काल में नारियों के साथ जो हुआ पुरूष प्रधान समाज में वह आज व्याख्यायित हो रहा है काव्य में ।

''उर्वषी, रम्भा, अहिल्या, नारियाँ, इन्द्र की पषुता तले रोती रही।
विवषता की छुटन सामाजिक चुभन, वक्ष को पाषाण कर ढ़ोती रही।।''[3]

मानव जीवन में घटित होने वाली छोटी–छोटी बातों से ही हमारी भावनाओं को उच्चमत्ता मिलती है। मानवीय संवेदनाएं व्यक्ति को हर छोटी–बड़ी घटनाओं के साथ जुड़ी होती है। हमें संवेदनाहीन होने से बचने के लिए छोटी–बड़ी सभी रिष्तों और बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमें आज परिवार समाज से, घर से, सब के प्रति हमारे कर्तव्यों का निर्वाहन करना ही एक मात्र उपाय है अगर हम भावनात्मक नही ंतो फिर हम में मषीन में क्या अन्तर होगा। इसलिए अपने जिम्मेदारियों, जवाब दारियों को समझना पड़ेगा न कि ज्यादा प्रायोगिक हो के रहना पड़ेगा।

''ओ दीमक के पुंज पुनः निर्माण करो।
सुन्दर सद्म सजा सुख का आह्वान करो।।''[4]

जयषंकर प्रसाद द्वारा रचित ''आँसू'' उनका प्रसिद्ध व्यापक मार्मिक दर्द पीड़ा से ओत–प्रोत, जिसके एक–एक षब्द में दर्द है।

''जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छायीं।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयीं।।''[5]

व्यक्ति आज जो अपने बच्चों की परवरिष करते है, उससे हमारे जीवन और समाज में गहरा प्रभाव पड़ता है । व्यक्ति का रहन सहन खास कर हम अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं। आधुनिक युग में मानवीय संवेदनाएं आज जो अपनी अस्मिता के लिए जूझ रहे है।

''उसने अपनी जिन्दगी गुजार दी सोचते–सोचते क्या गलत है क्या सही है ?
हजार मारा हाथ–पैर उबर ही नहीं पाया।''[6]

आज के वर्तमान समय में छोटी उम्र के बच्चों को हॉस्टल में डाल देते है। न तो वह माँ, बाप, दादा, दादी ये सब रिष्तो–नातों से दूर रहते है न संवेदनाएं न मानवीय जीवन के क्रियाकलापों को सीख पाते है। बड़े–छोटे, घर–परिवार का ज्ञान नहीं रहता वह केवल मषीन हो जाते है।

क्योंकि वहा अगर नैतिक मूल का पाठ हमारे विषय में नहीं रखा जाता तब यह सब होता है इसलिए षिक्षा का हमारे जीवन में भी बहुत ज्यादा प्रभाव पढ़ता है।

''कंठ तक डूबे हुए जो पंक में हैं, चांदनी महकी पवन क्या जान पायें,
निबिड़ तम में ही पले है जो जनम से, वह उजाले का कथन क्या जान पायें।''[7]

मनुष्य क्यों की सामाजिक प्राणी है इसलिए समाज का व्यवस्थित, प्रेम सौहार्द पूर्वक रखने के लिए समाज में सब से मिलकर रहना होगा जिससे हम सबके दुःख, कष्ट, प्रसन्नता सब में भावनात्मक रूप से सम्मिलित हो सकें।

आज का जो प्रेम है वह भी प्रायोगिक हो गया है। विवाह–विच्छेद की समस्या इसीलिए आ रही है। बाहरी जगत में हम प्रेम में दिखावा कितना कर उपहार आदि चाहे जितना दे ले पर अगर अन्तर मन में संवेदनाएं नहीं है तो छोटी–छोटी बातों को लेकर हमारे रिष्तों में अलगाव उत्पन्न हो जाता है।

क्योंकि प्रेम–समर्पण का बहुत गहरा नाता है और इन्हीं सब से भावनाओं का उदय हुआ। सब मिलाकर हमारे मानवीय संवेदनाओं को जीवन हृदय में विकसित कर सकते है।

''बेतहाषा भागती इस जिन्दगी में, कौन ऐसा है कि मुड़कर देख पाये,
सो गई संवेदनाएं इस कदर हैं कौन किसकी मौत पर आँसू बहाये,
पर, प्रकृति खामोष रह पाये असंभव कोप के अनगिनत आये उद्धारण है।''[8]

आज व्यक्ति का मूल्य या कीमत चुटकी भर भी नहीं रह गया है। इस पूंजीवादी युग में व्यक्ति केवल मनुष्य अपनी सुख–सुविधाओं पर ध्यान देता है। मानव मूल्यों का विघटन इस कल–पुर्जो के युग में इतनी तेजी से आया हैं। कि जैसे मनुष्यता, संवेदनाएं कहीं जा कर छुप सी गयी है।

माता पिता की बात करें अगर तो खुषी से अपने बच्चों का सारा बोझ उठा लेते है अपनी जिम्मेदारी समझ कर फिर वह पिता उन बच्चों को भारी हो जाता है। इस कर्तव्य पथ पर वह अपनी अकांक्षा जीवन का सारा सुख सब समर्पित कर देता है। पर फिर भी बाद में वह दोषी हो जाता है, क्यों कि बच्चों को सब देता है पर मानवीय संवेदनाएं या संस्कार नहीं दे पाता है।

नैतिक मूल्य की षिक्षा नहीं दे पाता वह केवल पैसा कमाना सिखाता है इसलिए ये सब होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ठाकुर सोम,(2005) ''हम नदिया की धार'' कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–1
2. सौनकिया संतोष,(2005)''हम नदिया की धार'' कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–15
3. सौनकिया संतोष,(2005)''हम नदिया की धार'' कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–13
4. सौनकिया संतोष,(2005)''हम नदिया की धार'' कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–16
5. प्रसाद जयशंकर, (1925)''आँसू'' प्रकाशन साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी
6. त्रिपाठी अरबिन्द(2017) ''सम्पादक श्री कान्त वर्मा रचनावली भाग एक राजकमल नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–416
7. सौनकिया संतोष,(2005)''हम नदिया की धार''कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–20
8. सौनकिया संतोष,(2005)''हम नदिया की धार''कमला प्रकाशन जालौन(उ.प्र.), पृष्ठ संख्या–58